(२०) जीयरा... जीयरा...

जीयरा... जीयरा...

जीयरा... जीयरा... जीयरा...

जीवराज उड़ के जाओ सम्मेदशिखर में;
भाव सहित वन्दन करो, पार्श्व चरण में॥ टेक॥

आज सिद्धों से अपनी बात हो के रहेगी,
शुद्ध आतम से मुलाकात हो के रहेगी;
रङ्ग रहित राग रहित भेद रहित जो,
मोह रहित लोभ रहित शुद्ध बुद्ध जो। जीयरा... ॥ 1 ॥

ध्रुव अनुपम अचल गति जिनने पाई है,
सारी उपमाएँ जिनसे आज शरमाई हैं;
अनन्तज्ञान अनन्तसुख अनन्तवीर्य मय,
अनन्तसूक्ष्म नाम रहित अव्याबाधी है। जीयरा. ॥ 2 ॥

अहो! शाश्वत सिद्धधाम तीर्थराज है,
यहाँ आकर प्रसन्न चैतन्यराज है;
शुरु करें आज यहाँ आत्म साधना,
चतुर्गति में हो कभी जन्म-मरण ना। जीयरा. ॥ 3 ॥